श्री महाराज जी ने गायत्री मंत्र का बहुत ही सुंदर शब्दार्थ और भावार्थ उपदेश रूप में सबके लिये कहा। श्री महाराज जी सभी जनों को गायत्री का जाप करने के लिये कहा करते थे।

गायत्री–मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ॐ।

शब्दार्थ

ॐ – सर्व व्यापक
भूः – सबके धारणकर्ता
भुवः – चैतन्य स्वरूप
स्वः – सब सुखों को देने वाले
तत् – उस परमात्मा का
सवितुः – सर्व जगत् के उत्पादक
वरेण्यं – स्वीकार करने योग्य, अति श्रेष्ठ
भर्गो – पवित्र करने वाले
देवस्य – सर्व ऐश्वर्य के देने वाले
धीमहि – ध्यान करते हैं, प्रार्थना करते हैं कि
धियः – बुद्धियों को
यः – वह परमात्मा
नः – हमारी
प्रचोदयात् – दुष्टाचार और अधर्म के मार्ग से हटाकर, श्रेष्ठाचार और सत्यमार्ग पर चलावें

सरल भावार्थ

जो नाना विध जगत में व्याप्त होकर सबका धारणकर्ता है। जगत उत्पादक एवं सर्व ऐश्वर्य का दाता है। सब सुखों का देने वाला है। स्वीकार करने योग्य व अति श्रेष्ठ है। पवित्र करने वाला तथा शुद्ध चैतन्यस्वरूप है। उस परमात्मा का हम सब ध्यान करते हैं। हमारी यही प्रार्थना है, कि वह परमेश्वर हमारी बुद्धियों को दुष्टाचार और अधर्मयुक्त मार्ग से हटाकर श्रेष्ठाचार और सत्य मार्ग पर चलावे। क्योंकि न कोई उसके तुल्य और न अधिक है। वही हमारा पिता, राजा, न्यायाधीश और सब सुखों का देने वाला है।

गायत्री परक प्रार्थना

हे तेज पुंज ज्योतिः स्वरूप परमात्मन्! ज्ञान और आनंद के देने वाले! विजय कराने वाले! प्रार्थना और स्तुति करने योग्य! सबको उत्पन्न करने वाले! सबकी रक्षा करने वाले! सबका संहार करने वाले! सबको प्रेरणा करने वाले! अनंत अपार आनंदस्वरूप ज्ञानस्वरूप परमात्मन्! हम तुम्हारा ध्यान करते हैं। तुम्हारे गुण हममें प्रकट हों और हम तुमको प्राप्त हों। जो तुम हो सो ही हम हैं और जो हम हैं सो ही तुम हो। ऐसे ऐक्य भाव से हम तुम्हारा ध्यान करते हैं। तुम हमारी बुद्धियों को पवित्र करो तथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में प्रेरणा करो। हममें तेरी सच्ची भक्ति व प्रेम प्रकट होवे। सबको हम अपना ही आत्मा समझें और हमारे शत्रु नाश को प्राप्त हों। भीतर काम, क्रोध इत्यादि एवं बाहर हमारी उन्नति में बाधक, विघ्नकारक शत्रु सब नष्ट हों। जिससे आनंद पूर्वक हम आपको प्राप्त हों। धन्यवाद पूर्वक हमारी आपको अनंत बार नमस्कार हो। हमारी रक्षा करो। एक मात्र आप ही हमारे रक्षक हो। ॐ शंकरोतु शंकरः।

अन्तिम वर्षों में तो श्री महाराज जी सब भक्तों को गायत्री मंत्र को ही गुरुमंत्र की तरह जपने के लिये कहा करते थे।

'ॐ'